बहू की विदा – विनोद रस्तोगी

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित अवतरणों को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिये:-

1. देना तो दूर, बारात की खातिर भी ठीक से नहीं की गयी | मेरे नाम पर जो धब्बा लगा, मेरी शान को जो ठेस पहुँची, भरी बिरादरी में जो हँसी हुई, उस करारी चोट का घाव आज भी हरा है | जाओ, कह देना अपनी माँ से कि अगर बेटी की विदा कराना चाहती हैं तो पहले उस घाव के लिए मरहम भेजें |

   a. प्रस्तुत सन्दर्भ का वक्ता कौन है और ये बात किससे कही जा रही है ?

उत्तर – प्रस्तुत सन्दर्भ का वक्ता जीवनलाल है, जो कमला का ससुर है और यह बात कमला के भाई प्रमोद से कही जा रही है |

b. जीवनलाल किस चोट की बात कर रहे हैं ?

उत्तर – जीवनलाल को लगता है कि उनके बेटे रमेश की शादी में कमला के मायके वालों ने उनकी हैसियत के अनुरूप दहेज़ नहीं दिया | न ही बारात की अच्छी तरह खातिरदारी की | इस बात को वे अपनी शान पर ले बैठे हैं और शान में कमी रह जाने को चोट की संज्ञा दे रहे हैं |

c. प्रस्तुत सन्दर्भ में घाव और घाव के मरहम से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – प्रस्तुत सन्दर्भ में घाव का अर्थ दहेज में कमी तथा मरहम का अर्थ रूपए पैसे से है | दरअसल जीवनलाल दहेज़ का लोभी है | वह अपने पुत्र रमेश के विवाह में दिए गए दहेज़ से नाखुश है और अधिक पैसों की माँग कर रहा है |

d. पाठ के आधार पर बताइए कि उपर्युक्त सन्दर्भ किस समस्या की ओर संकेत करता है ?

उत्तर – प्रस्तुत पाठ दहेज़ की समस्या की तरफ संकेत कर रहा है |

जीवनलाल जैसे लोग भरपूर दहेज़ पाने के बाद भी खुश नहीं होते और लालच के वशीभूत तरह तरह से लड़की के घरवालों को तंग करते हैं लेकिन जब वैसी ही परिस्थिति उन पर आ जाती है तो ऐसे लोग दूसरों को दोषी बताने लगते हैं और अपनी गलती का बोध भी करते हैं |